करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन।
अब सो क्योंए न बनि आवहीं, जो रोऊं पछताऊं रात दिन।। १५५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे ऊपर हंसी की है। जैसा हमने दावा भरा था, उसके अनुसार हममें से कोई भी नहीं चल सका। अब रात-दिन रोती हूं, पछताती हूं, परन्तु बिगड़ी बात किसी तरह से नहीं बनती।

सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे।
हंसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अर्स खिलवत के।। १५६ ।।

श्री राजजी महाराज! आपने जो खेल हमको दिखलाया वह देखा और आगे भी जो दिखाओगे सो देखूंगी। श्री राजजी महाराज! हंसो, खेलो, जैसा चाहो वैसा करो, परन्तु यह सब परमधाम मूल-मिलावे के अन्दर ही करो।

मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल माहें।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहें।। १५७ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कर श्री राजजी महाराज इनके दिलों में आकर बैठ गए हैं, इसलिए अब मोमिनों का अहंभाव खत्म हो गया, इसलिए अब मोमिनों पर कोई गुनाह नहीं बनता।

फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत।
ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित।। १५८ ।।

दुबारा विचार करके देखें तो गुनाह रूहों के सिर ही आता है। मोमिनों के सिर गुनाह किस तरह से आता है, इसका विवरण 'कलस' किताब में कहा। वहां से देख लेंगे।

रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का।। १५९ ।।

रूह मोमिन खेल में आए ही नहीं, इसलिए कोई गुनाह नहीं है। उनको उतना गुनाह फिर भी लगता है, जितना परमधाम का अंश उनके अन्दर है (अर्थात् उनका नाम तो है)।

महामत कहे मोमिनों पर, करी हांसी हुकमें।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक सें।। १६० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमारे पर हंसी करने के वास्ते ही हमारी ऐसी हालत कर दी है कि संसार में निस्संदेह होने पर भी हम यहां पर ही खड़े हैं।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ १६०६ ॥

मोमिन दुनीका बेवरा

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत।। १ ।।

जो परमधाम की आशिक रूहें हैं, उनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप उनके हृदय में से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकता।

Nijanand App

और न पावे पैठने, इत बका बीच खिलवत।
बका अर्स अजीम में, कौन आवे बिना निसबत।। २ ।।

मोमिनों के अतिरिक्त खिलवतखाना (मूल-मिलावे) में और कोई नहीं आ सकता। ठीक भी है। बिना श्री राजजी महाराज की अंगना के, जिनकी परआतम परमधाम में है, कौन आएगा?

और तो कोई है नहीं, बिना एक हक जात।
जात माहें हक वाहेदत, हक हादी गिरो केहेलात।। ३ ।।

हकजात मोमिन के सिवाय परमधाम में कोई नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के तन कहलाते हैं। लीला के वास्ते श्री राजश्यामाजी और मोमिन अलग-अलग कहलाते हैं।

वस्तर भूखन पेहेर के, मेरे दिल में बैठे आए।
हकें सोई किया अर्स अपना, रूह टूक टूक होए बल जाए।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज वस्त्र-आभूषणों सहित सिनगार करके मेरे दिल में आकर बैठ गए हैं। श्री राजजी महाराज ने मेरे दिल को अर्श किया है, इसलिए मेरी रूह श्री राजजी महाराज पर बलि-बलि जाती है।

दई बड़ाई मेरे दिल को, हक बैठे अर्स कर।
अपनी अंगना जो अर्स की, रूह क्यों न खोले नजर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज मेरे दिल को साहेबी (मान) देकर अपना अर्श बनाकर बैठ गए हैं। अब जो उनकी परमधाम की अंगना हैं, वह अपनी बातूनी नजर खोलकर क्यों पहचान नहीं करतीं?

दम न छोड़े मासूक को, मेरी रूह की एह निसबत।
क्यों बातें याद दिए न आवहीं, जो करियां बीच खिलवत।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज जो हमारे माशूक हैं। उनकी मैं अंगना हूं एक पल भी मैं उन्हें छोड़ नहीं सकती। खिलवतखाना (मूल-मिलावा) के बीच जो बातें और वायदे किए थे, अब याद क्यों नहीं आते?

जाको अनुभव होए इन सुख को, ताए अलबत आवे याद।
अर्स की रूहों को इस्क का, क्यों भूले रस मीठा स्वाद।। ७ ।।

जिन्हें परमधाम के सुखों का अनुभव हो, उन्हें घर की बातें निश्चित याद आनी ही चाहिए, क्योंकि यह रूहें श्री राजजी महाराज के इश्क के मीठे रस के स्वाद को कैसे भूल सकती हैं?

रूह केहेलाए छोड़े क्यों अपना, क्यों याद दिए जाय भूल।
हकें याही वास्ते, भेज्या अपना नूरी रसूल।। ८ ।।

परमधाम की आत्मा कहलाकर अपने घर को कैसे छोड़ दें? उन्हें याद कराने पर भी भूली बातें क्यों याद नहीं आतीं? श्री राजजी महाराज ने उनके वास्ते ही अपने नूरी रसूल को भेजा है।

हम अरवाहें जो अर्स की, तिन सब अंगों इस्क।
सो क्यों जावे हम से, जो आड़ा होए न हुकम हक।। ९ ।।

हम परमधाम की जो रूहें हैं, उनके सभी अंग इश्क के हैं। यदि श्री राजजी महाराज का हुकम आड़े नहीं आता, तो इश्क हमसे कैसे छूटता?

Nijanand App

ए निसबत नूरजमाल से, जो रूह को पोहोंचे रंचक।
तो लाड़ अर्स अजीम के, क्यों भूलें मुतलक।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की अंगना होने की थोड़ी सी खबर मिल जाती, तो परमधाम के लाड़ हम कैसे भूल जाते?

पर हुआ हाथ हुकम के, जो हुकम देवे याद।
हुकमें पेहेचान होवहीं, हुकमें आवे स्वाद।। ११ ।।

पर यह सब अब हुकम के हाथ की बात है, हुकम ही याद कराए तो याद आएगी और हुकम ही पहचान कराए तो परमधाम के लाड़ का स्वाद आ सकता है।

कबूल करी हम हांसी को, और अपनी मानी भूल।
सब सुध पाई कुंजी से, और फुरमान रसूल।। १२ ।।

हमने अपनी भूल मानकर श्री राजजी महाराज की हंसी को स्वीकार कर लिया है। यह सभी सुध तारतम ज्ञान की कुंजी से और रसूल साहब के कुरान से मिली।

अब हुई पेहेचान हुकम की, एक जरा न रही सक।
बोझ हम सिर ना रह्या, हक इलमें देखाया मुतलक।। १३ ।।

अब हमें हुकम की पहचान हो गई है। जरा भी संशय नहीं रह गया। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान ने साफ बता दिया है कि हमारे सिर पर कोई जिम्मेदारी नहीं है।

अब भूल हमारी जरा नहीं, और हक कर थके हांसी।
बात आई सिर हुकम के, अब काहे बिलखे रूह खासी।। १४ ।।

अब जरा भी हमारी भूल नहीं है। श्री राजजी महाराज हंसी करके थक गए हैं। सारी जिम्मेदारी श्री राजजी के हुकम की है, तो फिर हमारी रूह क्यों बिलखे?

देखना था सो सब देख्या, हक इस्क और पातसाई।
और हांसी रूहों इस्क पर, सब देखी जो देखाई।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के इश्क और बादशाही को जो देखना था सो देख लिया। अब श्री राजजी महाराज को जो रूहों के इश्क पर हंसी करनी है, वह सब भी देख ली, जो उन्होंने दिखाई।

क्यों न होए हुकम को हुकम, जो पेहेले किया इमदाए।
हुई उमेद सब की पूरन, अब क्यों न दीजे रूहें जगाए।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज उस हुकम को दुबारा हुकम क्यों नहीं देते, जो खेल के शुरू में दिया था। अब हम सब रूहों की चाहना पूर्ण हो गई है, तो इन्हें अब फरामोशी से क्यों नहीं जगाते हो?

लाड़ हमारे अर्स के, हम से न छूटें खिन।
अक्स हमारे के अक्स, क्यों लगे दाग तिन।। १७ ।।

परमधाम के हमारे लाड़ एक क्षण के लिए भी हमसे नहीं छूटते, तो हमारे मूल तन के अक्स आत्मा और आत्मा के अक्स इन तनों के ऊपर गुनाह का दाग क्यों लगाया जा रहा है?

Nijanand App

अब जो दिन राखो खेल में, सो याही के कारन।
इस्क दे बोलाओगे, ऐसा हुकमें देखें मोमिन।। १८ ।।

हे श्री राजजी महाराज! जितने दिन तक आप हमको इस खेल में रख रहे हैं, तो केवल हमें गुनहगार बनाने के वास्ते, कब आप इश्क देकर हमें बुलाओगे? ऐसे हुकम की राह हम मोमिन देख रहे हैं।

एक तिनका हमारे अर्स का, उड़ावे चौदे तबक।
तो क्यों न उड़े रूह अक्सें, बल इलम लिए हक।। १९ ।।

परमधाम के एक तिनके के सामने यह चौदह लोक का ब्रह्माण्ड समाप्त हो जाता है। फिर श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति जिन रूहों के इन तनों में आ गई है, तो फिर वह रूह इस तन में से निकलकर उड़ क्यों नहीं जाती?

जो कदी कहोगे रूहें इत न हुती, ए तो हुकमें किया यों।
तो नाम हमारे धर के, हुकम करे यों क्यों।। २० ।।

हे श्री राजजी महाराज! शायद आप यह कहें कि परमधाम की रूहें खेल में आई ही नहीं। यह तो सब खेल हुकम का है, तो फ़िर आपका हुकम हमारे नाम धर कर ऐसा खेल क्यों कर रहा है?

जो कदी हम आइयां नहीं, तो नाम तो हमारे धरे।
और तिन में हुकम हक का, हक तासों ऐसी क्यों करे।। २१ ।।

यदि हम खेल में नहीं हैं, तो हुकम ने हमारे नाम यहां क्यों धरे हैं? जिन तनों में श्री राजजी का हुकम है, तो फिर उन तनों को श्री राजजी महाराज गुनहगार क्यों बना रहे हैं?

अब तो सब ही करोगे, टालने हमारे दाग।
तुम रखियां ऐसा जान के, ना तो क्यों रहें पीछे हम जाग।। २२ ।।

अब हमारे दागों को मिटाने के लिए आप ही सब कुछ करोगे। ऐसा जानकर ही आपने खेल में हमें खड़ा कर रखा है। वरना जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागने के बाद हम पीछे कैसे रह सकते हैं?

हुकम पर ले डारोगे, तेहेकीक कराओगे दिल।
दाग अक्सों क्यों मिटे, जो हमारे नामों किए सब मिल।। २३ ।।

लगता है कि आप यह गुनाह हुकम पर डालकर हमारे दिल को तसल्ली करा दोगे, परन्तु हमारे इन अक्सों पर जो दाग आपने और आपके हुकम ने मिलकर हमारे नाम रखकर लगाए हैं, वह कैसे मिटेंगे?

जो कदी ए दाग धोए डारोगे, मन वाचा कर करमन।
अक्स हमारे नाम के, कदी रूहें बातें तो करसी वतन।। २४ ।।

यदि मन, वचन और कर्म से हमारे दाग मिट भी जाएं तो भी हमारे तनों के जो यहां नाम हैं, उनकी बातें परमधाम में तो कभी होंगी ही।

इन बात की हांसियां, अक्स नाम भी क्यों सहे।
हक विरहा बात सुन के, झूठी देह पकड़ क्यों रहे।। २५ ।।

इस बात की भी हंसी हमारे यह रूह के तन कैसे सहन करें? श्री राजजी महाराज से बिछुड़ने की बात सुनकर मोमिन इस झूठी देह को पकड़कर क्यों बैठे हैं?

Nijanand App

सो मैं गाया याद कर कर, कबूं पाया न विरहा रस।
नाम सहे ना हुकम सहे, ना कछू सहे अक्स।। २६ ।।

मैंने आपके इश्क को याद करके गा-गाकर मोमिनों को बताया, पर आपके विरह का रस कभी नहीं मिला। आपके बिछुड़ने के विरह को न हमारे नाम, न हुकम और न ही हमारी रूह के यह तन सुन सकते हैं।

और हांसी सब सोहेली, पर ए हांसी सही न जाए।
अक्स भी ना सेहे सकें, जब इलमें दिए पढ़ाए।। २७ ।।

परमधाम में सब तरह की हंसी सहन करना सहज है, पर यह दाग लग जाने वाली हंसी सहन नहीं होगी। जागृत बुद्धि ने जब हमारे सपने के तन को होश में ला दिया है, तो हमारे यह संसार के झूठे तन भी सहन नहीं कर सकते हैं।

ना रह्या इस्क अपना, ना रह्या वतन सों।
हक सों भी ना रह्या, तो कहा कहूं हुकम कों।। २८ ।।

खेल में न हमारा परमधाम से सम्बन्ध रहा और न श्री राजजी से ही इश्क रहा, तो अब हुकम को कैसे दोष दूं?

तुम हीं आप देखाइया, पेहेचान तुम इलम।
तुम हीं दई हिंमत, तुम हीं पकड़ाए कदम।। २९ ।।

आपने ही अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान से अपनी पहचान कराई। आपने ही हमारी हिम्मत बढ़ाकर अपने चरणों में ले लिया।

तुम हीं इस्क देत हो, तुम हीं दिया जोस।
सोहोबत भी तुम हीं दई, तुम हीं ल्यावत माहें होस।। ३० ।।

अब आप ही चरणों में लेकर हमको फरामोशी से होश में लाते हैं और अपना इश्क और जोश देते हैं।

तुम हीं उतर आए अर्स से, इत तुम हीं कियो मिलाप।
तुम हीं दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप।। ३१ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आप ही परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं। यहां आकर हमसे मिले हैं। आपने ही अपनी जागृत बुद्धि से परमधाम की पहचान कराकर ऐसी सुध दे दी, जैसे आप परमधाम की ही तरह साक्षात् हमारे पास हो।

तुम हीं देखाई निसबत, तुम हीं देखाई खिलवत।
तुम हीं देखाया सुख अखण्ड, तुम हीं देखाई वाहेदत।। ३२ ।।

आपने ही, मैं आपकी अंगना हूं, यह पहचान कराई। आपने ही मूल-मिलावे में एकदिली के साथ चरणों में बैठने का सुख दिखाया है।

खेल भी तुम देखाईया, दई फरामोसी भी तुम।
तुम हीं जगावत जुगतें, कोई नहीं तुम बिना खसम।। ३३ ।।

खेल भी आपने दिखाया है। फरामोशी भी आपने दी है और जागृत बुद्धि के ज्ञान से आप जगा भी रहे हो। आपके सिवाय कोई दूसरा नहीं है।

Nijanand App

काहू तरफ न देखाई अपनी, यों रहे चौदे तबक सें दूर।
सो सेहेरग से नजीक तुम हीं, हमको लिए कदमों हजूर।। ३४ ।।

आप चौदह तबकों से दूर ही बैठे रहे। किसी को अपनी सुध नहीं दी। आपने ही हमें अपने चरणों में लेकर, हमको सेहेरग से नजदीक आप हैं, ऐसा दिखा दिया।

मैं भी इत हों नहीं, ए भी कहावत तुम।
जब दूजे कर बैठाओगे, तब खसम को कहेंगे हम।। ३५ ।।

मैं भी यहां पर नहीं हूं, यह भी आप कहलवा रहे हैं। जब आप हमारे इन तनों से हमारी आत्मा को अलग करके हमारे जीवों को बहिश्त में जुदा कर बिठाओगे, तब हे धनी! हम आपसे खसम कहकर बातें करेंगे।

दूजे तो हम हैं नहीं, ए बोले बेवरा वाहेदत का।
ज्यों खेलावत त्यों खेलत, ना तो क्या जाने बात बका।। ३६ ।।

वाहेदत की एकदिली के विवरण से जाहिर है कि हम आपसे अलग नहीं हैं। अब इस संसार में जैसा आप खेलाते हैं, वैसा ही मैं खेलती हूं, वरना अखण्ड घर की बातें हम कैसे जानते?

ना तो नींद उड़े तन सुपना, ए रेहेवे क्यों कर।
देखो अचरज अदभुत, धड़ बोले सिर बिगर।। ३७ ।।

नींद उड़ जाने पर यह संसार का तन कैसे रह सकता है? बड़ी हैरानी वाली बात एक यह देखो कि हमारा धड़ संसार में है और सिर परमधाम में है, पर यहां धड़ बिना सिर के बोल रहा है।

धड़ दो एक सुकन कहे, तित अचरज बड़ा होए।
ए तन बिन बोले रूह अर्स की, कहे बानी बिना हिसाबें सोए।। ३८ ।।

यह तन (धड़) एक दो वचन जो कहता भी है, तो बड़ी हैरानी होती है। मेरी रूह तो परमधाम की है और तन भी श्री राजजी महाराज के चरणों के तले है, तो फिर रूह अपने तन के बिना यहां कैसे बिना हिसाब वाणी बोल रही है?

सो भी बानी नहीं फना मिने, अर्स बका खोल्या द्वार।
जो अब लग किने न खोलिया, कई हुए पैगंमर अवतार।। ३९ ।।

मोमिनों के धड़ (तन) जो वाणी बोलते हैं, तो वह वाणी संसार की नहीं है। इनकी वाणी ने ही परमधाम की पहचान कराई है, जिस परमधाम की खबर आज दिन तक कोई पैगंबर या अवतार नहीं दे सके।

अर्स रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार।
सोई जानें पार वतनी, जाको बातून रूहसों विचार।। ४० ।।

परमधाम की रूहों की पहचान जाहिर है, उनकी कहनी, करनी और रहनी सब पार परमधाम की ही होगी। इनको वही जान सकेंगे, जिनकी आत्मदृष्टि खुल चुकी होगी।

सो पट बका खोलिया, और बोले न बका बिन।
इनों पीठ दई चौदे तबकों, करें जाहेर अर्स रोसन।। ४१ ।।

मोमिनों ने ही अखण्ड परमधाम की पहचान कराई। वह परमधाम के अतिरिक्त संसार की वाणी नहीं बोलते। यह ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को छोड़कर परमधाम की पहचान कराते हैं।

Nijanand App

चौदे तबक की दुनी में, बका तरफ न पाई किन।
सो सबों ने देखिया, किया जाहेर बका हक दिन।। ४२ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में अखण्ड घर (परमधाम) की जानकारी किसी को नहीं मिली। मोमिनों ने अखण्ड जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सबको पहचान दे दी।

बेवरा किया फुरमान में, और हदीसें महंमद।
जिने खुली हकीकत मारफत, सोई जाने बातून सब्द।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में और रसूल साहब ने हदीस में इस बात का विवरण स्पष्ट लिखा है, परन्तु इनके रहस्यों को वही समझेगा, जिसको हकीकत और मारफत के भेद खुल गए हैं।

महंमद सिखापन ए दई, जो उतरीं अरवाहें सिरदार।
हक बका सिर लीजियो, छोड़ो दुनियां कर मुरदार।। ४४ ।।

श्री प्राणनाथजी ने एक बात और समझाई है कि जो परमधाम की रूहें हैं और खेल में आई हैं, वह श्री राजजी महाराज और परमधाम को शिरोधार्य करके बाकी दुनियां को मुरदार समझकर छोड़ दें।

महंमद कहें ए मोमिनों, ए अर्स अरवाहों रीत।
हक बका ल्यो दिल में, छोड़ो दुनियां कर पलीत।। ४५ ।।

मुहम्मद साहब (श्री प्राणनाथजी) कहते हैं कि हे मोमिनो! परमधाम की रूहों की यह रहनी है कि वह श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को दिल में रखकर नापाक (अपवित्र) दुनियां को छोड़ दें।

अर्स रूहें मोमिनों, लई महंमद हिदायत।
चौदे तबक को पीठ दे, आए माहें हक खिलवत।। ४६ ।।

परमधाम की रूहों ने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की हिदायत को समझा और दुनियां से चित्त हटाकर मूल-मिलावा में ध्यान लगाया।

कहें महंमद अर्स रूहें, तुम मछली हौज कौसर।
जो जीव दुनी मुरदार के, सो रहें ना तिन बिगर।। ४७ ।।

श्री प्राणनाथजी अपनी रूहों से कहते हैं कि तुम हौज कौसर में रहने वाली मछली हो। जैसे इस दुनियां के मुरदार जीव दुनियां के बिना नहीं रह सकते वैसे तुम्हें भी परमधाम के बिना नहीं रहना चाहिए।

अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दुनी दिल सैतान।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान।। ४८ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। दुनियां के दिल पर शैतान की बादशाही कही है, जिसकी गवाही रसूल साहब ने हदीसों में और श्री राजजी महाराज ने कुरान में दी है।

कहे कुरान दूजा कछुए नहीं, एक हक न्यामत वाहेदत।
और हराम सब जानियो, जो कछू दुनी लज्जत।। ४९ ।।

कुरान में लिखा है कि श्री राजजी महाराज और रूहों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। दुनियां के सभी ऐशो-आराम को हराम समझना।

Nijanand App

दुनी दोजख दरिया मछली, पातसाह सैतान दिल पर।
हराम खात है अबलीस, तिन तले दुनी का घर।।५०।।

दुनियां के जीव दोजख में जलने वाली भवसागर की मछली हैं। इनके दिलों पर शैतान (अबलीस, नारद) बैठा है। इस शैतान अबलीस की खुराक ही झूठ है, जिसके अधीन दुनियां पड़ी है।

ओलिया लिल्ला दोस्त, मोमिन बीच खिलवत।
ए अरवाहें अर्स की, इनों दिल में हक सूरत।।५१।।

मोमिन परमधाम में, श्री राजजी महाराज के ज्ञान को जानने वाले, श्री राजजी महाराज के दोस्त कहे जाते हैं। यह परमधाम की रूहें हैं, इनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो कायम हक वतन।
रूहें कही दरगाह की, जित असल मोमिनों तन।।५२।।

इसलिए मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अखण्ड वतन कहा है, जहां मूल तन परआतम हैं। रूहें उसी परमधाम रंग महल की रहने वाली हैं।

आदम नसल हवा बिना, ज्यों मछली जल बिन।
यों असल न छूटे अपनी, कही जुलमत दुनी वतन।।५३।।

जैसे मछली जल के बिना नहीं रहती, इसी तरह यह संसार के जीव माया के बिना नहीं रह सकते। इस तरह से अपनी असल कोई नहीं छोड़ता, इसलिए दुनियां का धाम निराकार कहा है।

मोमिन अर्स बका बिना, रेहे ना सके एक पल।
जो हौज कौसर की मछली, तिन हैयाती वह जल।।५४।।

मोमिन अखण्ड परमधाम के बिना एक पल नहीं रह सकते। यह हौज-कौसर की मछली हैं और उनका जीवन अखण्ड परमधाम का जल है।

मोमिन और दुनी के, कह्या जाहेर बड़ा फरक।
करे दुनी आहार फना मिने, अर्स मोमिन बका हक।।५५।।

मोमिन और दुनियां के जीवों में जाहिरी रूप से यही बड़ा अन्तर है। दुनियां की खुराक झूठा संसार है और मोमिनों का घर अखण्ड परमधाम है।

आए मोमिन नूर बिलंद से, और दुनियां कही जुलमत।
यों जाहेर लिख्या फुरमान में, किन पाई न तफावत।।५६।।

मोमिन परमधाम से आए हैं। दुनियां निराकार से है। ऐसा कुरान में जाहिर लिखा है, पर यह फर्क किसी को समझ में आया नहीं।

ए तो जाहेर कुरान पुकारहीं, और महंमद हदीस।
ए बेवरा क्या जानहीं, जिन नसलें लिख्या अबलीस।।५७।।

कुरान और मुहम्मद साहब की हदीस में साफ कहा है कि जिनके नसीब में शैतान लिखा है, जो शैतान के अधीन हैं, वह इस फर्क को कैसे जान सकते हैं?

Nijanand App

जो मोमिन होते इन दुनी के, तो करते दुनी की बात।
चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात।। ५८ ।।

मोमिन यदि दुनियां के होते, तो दुनियां की बातें करते और दुनियां की चाल चलते।

जो यारी होती मोमिन दुनी सों, तो दुनीको न करते मुरदार।
रूहें इनसे जुदी तो हुई, जो हम नाहीं इन के यार।। ५९ ।।

मोमिनों की यदि दुनियां से यारी होती, तो दुनियां को मुर्दा समझकर न छोड़ते, इसलिए मोमिन इन दुनियां वालों से अलग होते हैं, क्योंकि दुनियां वालों से उन्हें कोई लगाव नहीं होता।

दुनी चलन इन जिमी का, चलना हमारा आसमान।
मोमिन दुनी बड़ी तफावत, ए जानें मोमिन विध सुभान।। ६० ।।

दुनियां की रीति-रिवाज संसार की होती है और रूहों की अपने परमधाम की, इसलिए मोमिन और दुनियां में बड़ा फर्क है, जिसको मोमिन ही समझ सकते हैं।

हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल।। ६१ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज तो बहुतों को मिले, पर उनकी रहनी पर कोई नहीं चल सका (कदमों पर कदम नहीं रखे)। उनकी रहनी पर वही चलेंगे, जो परमधाम के होंगे।

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूहकी, इत दुनी मार न सके दम।। ६२ ।।

मोमिन श्री प्राणनाथजी के बताए रास्ते पर चलेंगे। दुनियां के आदमी मोमिनों की रहनी पर एक पल के लिए भी नहीं चल सकते।

आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल।
दुनियां बंदी हवाए की, मोमिन बंदे नूरजमाल।। ६३ ।।

संसार के जीव शरीर को सम्भालने में लगे रहेंगे। वह रूह (मोमिनों) की रहनी में नहीं आ सकते। दुनियां निराकार की पूजक है और मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

रूहें आइयां बीच दुनी के, धरे नासूती वजूद।
रूहें चाल न छोड़ें अपनी, जो कदी आइयां बीच नाबूद।। ६४ ।।

रूहें खेल में उतरी हैं और माया के तन धारण कर रखे हैं। फिर भी नाचीज दुनियां में आकर अपनी रहनी को नहीं छोड़ सकतीं।

दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए।
रूह मोमिन पर ईमान के, दुनी पर बिन क्यों उड़ाए।। ६५ ।।

दुनियां वालों और मोमिनों में यही बड़ा फर्क है कि वह एक दूसरे की चाल पर नहीं चलते। मोमिनों को ईमान के पर (पंख) लगे हैं। दुनियां परों के बिना उड़ नहीं सकती।

करना दीदार हक का, एही मोमिनों ताम।
पानी पीवना दोस्ती हक की, इनों एही सुख आराम।। ६६ ।।

मोमिनों का खाना, पीना श्री राजजी के दर्शन और दोस्ती है। उनका आराम इसी में है।

Nijanand App

मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक।।६७।।

मोमिनों को जब तक इश्क नहीं आ जाता तभी तक बंदगी करते हैं। इश्क आने के बाद आशिक मोमिन, माशूक श्री राजजी महाराज एक हो जाते हैं, फिर उसके बाद बन्दगी किसकी?

आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए।
और आसिक भी न बूझहीं, एक होत दोऊ से सोए।।६८।।

आशिक रूहों की यही बन्दगी है, जिसको जाहिरी में कोई नहीं जानता। आशिक रूहें भी नहीं समझतीं कि यह श्री राजजी महाराज से एक कैसे हो गईं?

ए जाहेर है तफावत, जो कर देखो सहूर।
दुनियां सहूर भी ना कर सके, क्या करे बिना जहूर।।६९।।

विचार करके देखो तो यह फर्क बिल्कुल स्पष्ट है। दुनियां इस तरह सोच भी नहीं सकती। बिना पहचान के वह क्या करे?

मोमिन खाना अर्स में, हुआ दुनी जिमी में आहार।
दुनी रोजगार नासूती, जो मोमिनों करी मुरदार।।७०।।

मोमिनों का आहार परमधाम में है और दुनियां के जीवों का झूठे संसार में। दुनियां मृत्युलोक के रोजगार-धन्धे में लगी है, जिसको मोमिनों ने तुच्छ समझकर छोड़ दिया।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कही दुनी आई जुलमत।
जो देखो वेद कतेब को, तो जाहेर है तफावत।।७१।।

मोमिन परमधाम से उतरे हैं, दुनियां निराकार से पैदा हुई है। वेद और कतेबों में देखो। यह अन्तर स्पष्ट लिखा है।

मोमिन लिखे आसमानी, दुनियां जिमी की कही।
ना तो वजूद दोऊ आदमी, ए तफावत क्यों भई।।७२।।

मोमिनों को आकाश का लिखा है और दुनियां को जमीन का, वरना दोनों ही आदमी के तन में हैं, तो यह फर्क कैसे हो गया?

कहे पर इस्क ईमान के, स्ते मोमिन छोड़ें न पल।
सो दुनी को है नहीं, उत पांउं न सके चल।।७३।।

मोमिनों के ईमान और इश्क के पर (पंख) कहे हैं, जिसे वह एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते। दुनियां वालों के पंख नहीं है और वहां पांव से चलकर जा नहीं सकते।

हकें फुरमाया चौदे तबक, है चरकीन का चरकीन।
सो छोड़ें एक मोमिन, जिनमें इस्क आकीन।।७४।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में साफ लिखा है कि चौदह लोक गन्दी से गन्दी जगह है। इसे केवल मोमिन छोड़ सकेंगे, जिनके अन्दर ईमान और इश्क है।

Nijanand App

सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार।
ईमान इस्क जो होवहीं, तो क्यों रहें बीच मुरदार।।७५ ।।

दुनियां वालों के पास पर (ईमान और इश्क) नहीं हैं जिससे वह हद को छोड़कर बेहद में चले जाएं। अगर इनमें भी ईमान और इश्क आ जाता, तो यह नाचीज दुनियां में कैसे रह जाते?

ऊपर तले अर्स ना कह्या, अर्स कह्या मोमिन कलूब।
ए जानें रूहें अर्स की, जिन का हक मेहेबूब।।७६ ।।

परमधाम दुनियां में ऊपर-नीचे कहीं नहीं है। अर्श मोमिनों के दिल को कहा है। यह परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जिनके महबूब अक्षरातीत श्री राजजी महाराज हैं।

दुनी दिल मजाजी कह्या, मोमिन हकीकी दिल।
बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं, जो अर्सें रहे हिल मिल।।७७ ।।

दुनियां के दिल को झूठा कहा है और मोमिनों के दिल को सच्चा। जिस तरह से मोमिन अर्श में श्री राजजी से हिले-मिले एक तन हैं, दुनियां को उसकी खबर भी नहीं लग सकती, तो वह उसे कैसे प्राप्त करे?

वेद कतेब पढ़ पढ़ गए, किन पाई न हक तरफ।
खबर अर्स बका की, कोई बोल्या न एक हरफ।।७८ ।।

दुनियां वालों ने वेद-कतेब पढ़े, पर पारब्रह्म के ठिकाने का पता किसी को नहीं चला, इसलिए अखण्ड परमधाम का एक शब्द भी कोई नहीं बोला।

इंतहाए नहीं अर्स भोम का, सब चीजों नहीं सुमार।
ऊपर तले माहें बाहेर, दसों दिसा नहीं पार।।७९ ।।

परमधाम की भूमि का अन्त नहीं है और न वहां की चीजों की ही गिनती है। ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर दसों दिशाओं में सभी चीजें बेशुमार हैं।

तो भी दुनियां अर्स देखे नहीं, यों देखावत कतेब वेद।
पावे न लाम इलम बिना, कोई इन विध का है भेद।।८० ।।

वेद-कतेब ऐसा कहते हैं, फिर भी दुनियां परमधाम की तरफ नहीं देखती। जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना जो मलकी स्वरूप श्री श्यामाजी लाए हैं, इस भेद को दुनियां वाले नहीं समझ सकते।

सुध दई महंमद ने, अर्स पाइए मोमिन बीच दिल।
जिनपे इलम हक का, दिल अर्स रहे हिल मिल।।८१ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने बताया है कि मोमिनों का दिल श्री राजजी का अर्श है और इनके वास्ते ही जागृत बुद्धि का ज्ञान आया है। इस तरह से मोमिन ही श्री राजजी महाराज से हिले-मिले हैं।

दुनी जाने मोमिन दुनी से, ए नहीं बीच इन खलक।
एता भी न समझै, पुकारत कलाम हक।।८२ ।।

दुनियां वाले मोमिनों को दुनियां का ही समझते हैं, पर मोमिन दुनियां के नहीं हैं। कुरान में ऐसा स्पष्ट कहने पर भी दुनियां वाले नहीं समझ पाए।

Nijanand App

कहे मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत।
ए अर्स में अर्स इन दिल में, यों हिल मिल बीच खिलवत।। ८३ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि मोमिन परमधाम के हैं और इनका दिल खुदा का अर्श है। इनके दिलों में खुदा बैठा है। यह संसार में रहते हुए भी परमधाम में हैं और इनका दिल ही अर्श है। इस तरह से यह मोमिन श्री राजजी महाराज से एकाकार हैं।

खुली मुसाफ हकीकत, तिन इतहीं हक वाहेदत।
अर्स बरकत सब इतहीं, इतहीं हक निसबत।। ८४ ।।

इनको ही कुरान की हकीकत का ज्ञान है और यह ही संसार में बैठकर श्री राजजी और मूल-मिलावा का आनन्द लेते हैं। यह परमधाम की अंगना हैं और सारी बरकत इनके पास है।

इतहीं न्यामत मोमिनों, सब खुली जो इसारत।
इतहीं मेला रूहों असल, इतहीं रूहों कयामत।। ८५ ।।

मोमिनों की सब इशारतें जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुल गई हैं, इसलिए परमधाम की सब न्यामतें इनके पास यहीं पर हैं। यहीं पर उन्हें परमधाम की रूहों से मिलावा होगा। यहीं पर दुनियां को अखण्ड मुक्ति देंगी।

ए बारीक बातें रूह मोमिनों, सो समझें रूह मोमिन।
सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क इमान बिन।। ८६ ।।

यह मोमिनों की बारीक (खास) बातें हैं, इसे वही समझ सकते हैं। जिनके पास इश्क और ईमान नहीं है, वह इन्सान पशु के समान हैं।

दुनी जाने तन मोमिन, बैठे हैं हम माहें।
बोलत हैं बानी बका, ए रूहें तन दुनी में नाहें।। ८७ ।।

दुनियां वाले यह समझते हैं कि मोमिनों के तन हमारे समान हैं। हमारे बीच में बैठे हैं। जबकि यह मोमिन परमधाम की वाणी बोलते हैं और इनके असल तन दुनियां में नहीं हैं।

रूहें तन माहें अर्स बका, और अर्स में बैठे बोलत।
तो नजीक कहे सेहेरग से, देखो मोमिनों हक हिकमत।। ८८ ।।

रूहों के असल तन परमधाम में हैं। वह अर्श से ही बोल रहे हैं। श्री राजजी महाराज की इस हिकमत को देखो, इसलिए मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने सेहेरग से नजदीक कहा है।

इनों तन असल अर्स में, इनों दिल में जो आवत।
सोई इनों के अक्स में, सुकन सोई निकसत।। ८९ ।।

इनके मूल तन परमधाम में हैं और तनों में जो चाहना होती है, उनके प्रतिबिम्ब जो संसार के तन हैं, उनसे भी वही वाणी निकलती है।

मोमिन तन असल से, अर्स मता कछू न छिपत।
तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत।। ९० ।।

मोमिनों की परआतम से परमधाम का कुछ छिपा नहीं है, इसलिए इनको ही कुरान में अखण्ड सूर्य कहा है और इनसे ही अज्ञान का अन्धकार मिटकर ज्ञान का सवेरा होगा।

Nijanand App

ए बारीक बातें अर्स की, जो गुजरीं माहें वाहेदत।
हक हादी और मोमिन, सो जाहेर हुई खिलवत।। ९१ ।।

यह परमधाम की बारीक बातें है जो परमधाम में हुई थीं। अब श्री राजश्यामाजी और मोमिनों की सभी बातें मूल-मिलावा की जाहिर हो गईं।

तो दुनियां होसी हैयाती, ले मोमिनों बका बरकत।
ए बात दुनी क्यों बूझहीं, ओ जात हक निसबत।। ९२ ।।

अब मोमिनों की कृपा से ही सारी दुनियां को कायमी (अखण्ड मुक्ति) मिलेगी, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज की अंगना हैं। इन्हें दुनियां कैसे समझेगी?

ए हक मता रूह मोमिन, इनों ताले लिखी न्यामत।
सो क्यों कर दुनियां समझै, कही असल जाकी जुलमत।। ९३ ।।

मोमिनों के ताले में (नसीब में) परमधाम का ज्ञान और श्री राजजी महाराज की न्यामतें हैं। इस भेद को दुनियां वाले नहीं समझ सकते, क्योंकि वह निराकार से पैदा हैं।

आब हैयाती बका मिने, झूठी जिमी आवे क्यों कर।
दिल आवे अर्स मोमिन के, और न कोई कादर।। ९४ ।।

दुनियां को अखण्ड करने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान इस झूठी दुनियां में कैसे आ सकता है? यह तो मोमिनों के अर्श दिल में ही आ सकता है और दूसरा कोई भी समर्थ नहीं है।

ए मोहोरे जो खेल के, झूठे खाकी नाबूद।
आब हैयाती पीय के, क्यों होसी बका बूद।। ९५ ।।

यह खेल के मालिक त्रिदेव भी झूठे और मिटने वाले हैं। वह भी इस अखण्ड ज्ञान को प्राप्त करके अखण्ड हो जाएंगे।

ए मोहोरे पैदा जो खेल के, हक मोमिनों देखावत।
याही बराबर अक्स, मोमिनों के बका बोलत।। ९६ ।।

श्री राजजी महाराज अपने मोमिनों को इस संसार के त्रिगुण का खेल दिखला रहे हैं। इस तरह मोमिनों के प्रतिबिम्ब नश्वर माया में बैठकर परमधाम की वाणी बोलते हैं।

जो तन अर्स में मोमिनों, सो मता अक्सों पोहोंचावत।
सो अक्सों से बीच दुनी के, मोमिन मेहेर करत।। ९७ ।।

मोमिनों की जो परआतम परमधाम में है, उनकी सारी बातें खेल में रूहों के इन तनों में पहुंच जाती हैं। श्री राजजी की मेहर से ही यह परमधाम की बातें उनके अक्स माया के तनों में पहुंच जाती हैं।

आब हैयाती इन विध, अर्स से रूहें ल्यावत।
ए बरकत रूह अल्लाह की, यों अर्स मता आया इत।। ९८ ।।

इस तरह से परमधाम का वह अखण्ड ज्ञान रूहें खेल में लाती हैं। श्री श्यामा महारानी की कृपा से जागृत बुद्धि का ज्ञान इसी तरह से संसार में आया।

Nijanand App

और बरकत महंमद की, साहेदी देत फुरमान।
तिन साहेदी से ईमान, पोहोंच्या सकल जहान।। ९९ ।।

कुरान गवाही देता है कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की कृपा से यह ज्ञान सारे संसार में आएगा जिससे सबको ईमान आएगा।

ए इलम जानें रूहें अर्स की, और न काहूं खबर।
खेल मोहोरे तो कछू हैं नहीं, एक जरे भी बराबर।। १०० ।।

इस ज्ञान को परमधाम की रूहें ही जानती हैं और किसी को खबर नहीं है। इस खेल के मोहरे त्रिदेव एक कण के बराबर भी नहीं हैं।

ए खाकीबुत सब नाबूद, इनको कायम किए मोमिन।
आब हैयाती अर्स की, पिलाए के सबन।। १०१ ।।

इस मिट जाने वाली दुनियां को परमधाम का अखण्ड ज्ञान देकर मोमिनों ने बहिश्तों में अखण्ड कायमी दी।

ऐसा मता मोमिन, अर्स सेती ल्यावत।
बुतखाकी सरभर रूहों की, समझे बिना करत।। १०२ ।।

ऐसा अखण्ड ज्ञान मोमिन परमधाम से लाए हैं। संसार के नाचीज जीव बिना समझे ही मोमिनों की बराबरी करते हैं।

अर्स इलम हुआ जाहेर, जब सब हुए रोसन।
तब अंधेरी और उजाला, जुदे हुए रात दिन।। १०३ ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड ज्ञान जाहिर हो गया है, जिससे सबको पता लग गया। अब अज्ञानता का अंधेरा मिट गया और ज्ञान का उजाला हो गया। इस तरह से रात और दिन की अलग-अलग पहचान हो गई।

अर्स तो दूर है नहीं, कहें दोऊ कतेब वेद।
अर्स में रूहें दुनी फना जिमी, ए इलम लदुन्नी जानें भेद।। १०४ ।।

वेद और कतेब (कुरान) दोनों ऐसा कहते हैं कि परमधाम दूर नहीं है। रूहें परमधाम में रहती हैं और दुनियां मिटने वाली, निराकार के अन्दर रहती है। इस भेद को तारतम ज्ञान ने ही जाहिर किया है।

पर ए सुध दुनी में है नहीं, तो क्या जाने कित अर्स।
क्यों हक क्यों हादी रूहें, क्यों दिल मोमिन अरस-परस।। १०५ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान दुनियां वालों के पास नहीं है, तो परमधाम कहां है, वह कैसे जानें? किस तरह से श्री राजश्यामाजी और रूहें एक दिल हैं, इसे वह कैसे समझें?

बका जिमी जल तेज वाए, और बका आसमान।
आपन बैठे वाही अर्स में, पर नजरों देखें जहान।। १०६ ।।

परमधाम की जमीन, आसमान, जल, वायु, अग्नि सभी अखण्ड हैं। रूहों के असल तन भी परमधाम में हैं, जहां वह बैठी हैं, पर ध्यान से संसार को देख रही हैं।

Nijanand App

जहान तो कछू है नहीं, है अर्स बका हक।
हक इलम ले देखिए, तो होइए अर्स माफक।। १०७ ।।

संसार तो कुछ भी नहीं है। अखण्ड तो केवल परमधाम है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से जब देखें, तो हम परमधाम के हैं, ऐसा मालूम होता है।

नाबूद कही जो दुनियां, तिनकी नजर भी नाबूद।
अर्स रूहें हक इलमें, ए आसिकै देखे मेहेबूब।। १०८ ।।

दुनियां मिटने वाली है, इसलिए दुनियां वालों की नजर भी मिटने वाली दुनियां में ही रहती है, जबकि परमधाम की रूहें श्री राजजी के अखण्ड ज्ञान से श्री राजजी को ही देखती हैं।

इत आंखें चाहिए हक इलम की, तो हक देखिए नैना बातन।
नैना बातून खुलें हक इलमें, ए सहूर है बीच मोमिन।। १०९ ।।

संसार में श्री राजजी को देखने के लिए जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति चाहिए। फिर पारब्रह्म को आत्मदृष्टि से देख सकते हैं। बातूनी दृष्टि जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही खुलती है, जिसका विचार मोमिनों के पास है।

जिन बेचून बेचगून नजरों, ताए खबर न इलम हक।
हक इलम देखावे मासूक, इन हाल मोमिन कहे आसिक।। ११० ।।

जिन दुनियां वालों को निराकार और निर्गुण ही दिखाई देता है, उन्हें श्री राजजी महाराज के इलम की पहचान नहीं है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान श्री राजजी महाराज के दर्शन करा देता है, जिनके आशिक मोमिन हैं।

कहे पांच तत्व ख्वाब के, तामें बुजरक केहेलाए कई लाख।
पर अर्स बका हक ठौर की, कहूं जरा न पाइए साख।। १११ ।।

संसार पांच तत्व, तीन गुण का है। इसमें लाखों ज्ञानी और अगुए हो गए हैं, परन्तु अखण्ड ठिकाना परमधाम का ज्ञान किसी को प्राप्त नहीं हुआ, इसलिए किसी ने वहां की गवाही नहीं दी।

ख्वाब पैदा बका जिमी से, पर देखे न बका को।
एक जरा बका आवे जो ख्वाब में, तो सब ख्वाब उड़े तिनसों।। ११२ ।।

यह संसार अखण्ड परमधाम से ही पैदा है पर यहां के जीव अखण्ड को नहीं देख सकते। अखण्ड की एक जर्रा मात्र सुध भी सपने में आ जाए, तो यह संसार ही मिट जाए।

ना तो ख्वाब जिमी बका जिमी सों, एक जरा न तफावत।
पर झूठ न रहे सांच नजरों, आंखें खुलतै ख्वाब उड़त।। ११३ ।।

वरना संसार की जमीन और परमधाम की जमीन में थोड़ा भी फर्क नहीं है। परमधाम की नजर के सामने यह झूठा संसार रह नहीं सकता। जैसे ही परमधाम से फरामोशी का परदा हटेगा, वैसे ही संसार समाप्त हो जाएगा।

ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर।
हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर।। ११४ ।।

यह संसार के लोग सब सपने के हैं, जो मोमिनों की बराबरी करते हैं। सच को देखकर जो समाप्त हो जाए, उसे दूसरा कैसे कहा जाए?

Nijanand App

हक देखे जो खड़ा रहे, तो दूजा कह्या जाए।
दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए।। ११५ ।।

सत के सामने जो खड़ा रहे, वही दूसरा कहला सकता है, इसलिए संसार के जीव जो सपने के हैं, उन्हें दूसरा कैसे कहा जाए? यह तो नींद के समाप्त होते ही समाप्त हो जाएंगे।

ए इलमें सुनो अर्स बारीकियां, जो सहें अर्स हक रोसन।
ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमिन वाहिद तन।। ११६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की बारीक (खास) बातें सुनें। जो श्री राजजी महाराज और परमधाम की बातों को सुनकर सहन कर सकते हैं, उनको भी दूसरा कैसे कहा जाए? वह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं।

हक हादी रूहें मोमिन, ए अर्स में वाहेदत।
पर ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रूहें हक खिलवत।। ११७ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें परमधाम में एक दिल हैं। इस बात को परमधाम की रूहें ही जानती हैं कि वह श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा में बैठी हैं।

इतहीं कजा होएसी, इतहीं होसी भिस्त।
दोजख इतहीं होएसी, दुनी तले नूर नजर कयामत।। ११८ ।।

यहीं संसार में बैठकर खुदा सबके न्यायाधीश बनकर सबका न्याय चुकाएंगे। यहीं पर बैठकर सब दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करेंगे और यहीं पर दुनियां को पश्चाताप की अग्नि में जलाकर अक्षर की नजर योगमाया में अखण्ड कर देंगे।

दम ख्वाबी देखें क्यों बका को, कर देखो सहूर।
ख्वाब दुनी तब क्यों रहे, जब हुआ दिन बका जहूर।। ११९ ।।

विचार करके देखो। यह संसार के जीव अखण्ड को कैसे देख सकते हैं? जब अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर हो गया, तो यह स्वप्न की दुनियां कैसे रह सकती है?

दुनी मगज न जाने मुसाफ का, तो देखे अर्स को दूर।
जो जानें हक इलम को, तो देखें मोमिन हक हजूर।। १२० ।।

दुनियां वाले कुरान के भेदों को नहीं समझते, इसलिए अर्श को दूर समझते हैं। जो श्री राजजी महाराज के इलम को समझते हैं, वही मोमिन श्री राजजी के पास रहते हैं।

भिस्त दोजख दोऊ जाहेर, ए लिख्या माहें फुरमान।
तिन छोड़ी दुनियां हराम कर, जिन हुई हक पेहेचान।। १२१ ।।

बहिश्त और दोजख की पहचान कुरान में जाहिर लिखी है। जिनको श्री राजजी महाराज की पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान से हो जाती है, वह दुनियां को मिटने वाली नाचीज समझकर छोड़ देते हैं।

तो तरक करी इनों दुनियां, जो अर्स दिल मोमिन।
दुनी जलसी इत दोजख, जब दिन हुआ बका रोसन।। १२२ ।।

मोमिनों ने दुनियां को छोड़ दिया है, क्योंकि इनके दिल को अर्श कहा है। जब अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय होगा, तो दुनियां पश्चाताप की अग्नि में जलेगी।

Nijanand App

हकें दिया लदुन्नी जिनको, सो बैठे अर्स में बेसक।
जब कौल पोहोंच्या सरत का, तब होसी दुनी इत दोजक।। १२३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिन्हें जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है, वह अवश्य ही परमधाम में बैठे हैं। जब ब्रह्माण्ड की कायमी का समय आ जाएगा, तब दुनियां पश्चाताप की अग्नि में जलेगी।

अर्स नासूत दोऊ इतहीं, होसी जाहेर अपनी सरत।
देखें मोमिन दुनी जलती, बीच बैठे अपनी भिस्त।। १२४ ।।

परमधाम और मृत्युलोक दोनों का ज्ञान अपने समय पर संसार में जाहिर हो जाएगा और तब मोमिन अपने घर में बैठकर दुनियां को पश्चाताप की अग्नि में जलता देखेंगे।

काफर देखें मोमिनों भिस्त में, आप पड़े बीच दोजक।
सुख मोमिनों का देख के, जलसी आग अधिक।। १२५ ।।

सब दुनियां के काफिर लोग पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए मोमिनों को अखण्ड सुख में देखेंगे। उस सुख को देखकर वह और भी ईर्ष्या की अग्नि में जलेंगे।

मोमिन दुनी दोऊ आदमी, हुई तफावत क्यों कर।
ए बेवरा है फुरमान में, पर कोई पावे न हादी बिगर।। १२६ ।।

संसार में मोमिनों के और जीवों के तन एक से होने पर ही इस तरह से उनमें फर्क क्यों हो गया। इसका विवरण कुरान में लिखा है, परन्तु स्वामी श्री प्राणनाथजी की मेहर बिना कोई नहीं पा सकता।

बीते नब्बे साल हजार पर, मुसाफ मगज न पाया किन।
तो गए एते दिन रात में, हुआ जाहेर न बका दिन।। १२७ ।।

रसूल साहब से एक हजार नब्बे वर्ष तक, अर्थात् सम्वत् १७३५ तक कुरान के भेदों को कोई नहीं समझ सका। इतने दिन तक अज्ञानता का अंधेरा रहा। अखण्ड ज्ञान के सूर्य श्री प्राणनाथजी तब जाहिर नहीं हुए थे।

मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, खोली हक हकीकत मारफत।। १२८ ।।

मोमिन परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं, उनके दिलों में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं। उन्होंने ही हकीकत और मारफत के भेद खोले हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है।

दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमत।
काम हाल इनों अंधेर में, हवा को खुदा कर पूजत।। १२९ ।।

दुनियां के दिल पर शैतान अबलीस की बादशाही है और यह निराकार से पैदा है। इनकी कहनी, करनी और रहनी सब माया की है और यह निराकार को ही खुदा करके पूजते हैं।

कुलफ हवा का दुनी के, दिल आंखों कानों पर।
ईमान क्योंए न आए सके, लिख्या फुरमान में यों कर।। १३० ।।

दुनियां के दिल, कान और आंखों पर निराकार का परदा पड़ा है, इसलिए इनको ईमान किसी तरह से नहीं आ सकता, ऐसा कुरान में लिखा है।

Nijanand App

कौल हाल मोमिन के नूर में, रूहअल्ला आया इनों पर।
दिया इलम लदुन्नी इन को, खोलनें मुसाफ खातिर।। १३१ ।।

मोमिनों की कहनी और रहनी सब परमधाम के लिए है। श्यामा महारानी इन्हीं के वास्ते ही आईं और कुरान के छिपे रहस्य खोलने के लिए जागृत बुद्धि का ज्ञान इन्हीं को दिया है।

राह तौहीद पाई इनों नें, जो राह मुस्तकीम सिरात।
ए मेहेर मोमिनों पर तो भई, जो तले कदम हक जात।। १३२ ।।

परमधाम का सरल रास्ता इन्होंने ही पाया है, क्योंकि यह श्री राजजी के चरणों तले बैठे हैं और उन्हीं के अंग हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज की मेहर मोमिनों पर है।

हुई लानत अजाजील को, सो उलट लगी सब जहान।
अबलीस लिख्या दुनी नसलें, कही ए विध माहें कुरान।। १३३ ।।

अजाजील फरिश्ते को हुकम न मानने से लानत लगी, सजा मिली। वह सजा सारी दुनियां को लग गई, क्योंकि कुरान में लिखा है कि दुनियां वालों के दिलों पर अबलीस, शैतान (नारद) की बादशाही है।

देसी पैगंमर की साहेदी, गिरो अदल से उठाई जे।
करी हकें हिदायत इन को, बहत्तर नारी एक नाजी ए।। १३४ ।।

कुरान में लिखा है कि मोमिनों को, दुनियां के न्याय से पहले ही, दुनियां से उठा लिया जाएगा। यही वह नाजी फिरका है जिनके पास पारब्रह्म का ज्ञान होगा। बाकी बहत्तर फिरके दोजखी होंगे।

तन मोमिन अर्स असल, आड़ी नींद हुई फरामोस।
सो नींद वजूद ले उड़या, तब मूल तन आया माहें होस।। १३५ ।।

मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं, जिन पर फरामोशी का परदा पड़ा है। जब उनके यह संसार के तन हट जाएंगे तो उनकी परआतम से फरामोशी टल जाएगी और होश में आकर उठ खड़े होंगे।

दुनी तन जुलमत से, इन की असल न बका में।
जब फरामोसी उड़ी जुलमत, तब जरा न रह्या दुनी सें।। १३६ ।।

दुनियां के तन निराकार से पैदा हैं, जिनका मूल अखण्ड में नहीं है। जब फरामोशी समाप्त हो जाएगी, तो दुनियां का महाप्रलय हो जाएगा (इनका कुछ भी नहीं रह जाएगा)।

अरवाहें जो सुपन की, देखें न जाग्रत को।
जो होए जाग्रत में असल, सो आवे जाग्रत मों।। १३७ ।।

यह सपने के जीव जागृत को नहीं देख सकते। जिनके असल तन परमधाम में हैं, वही परमधाम में आएंगे।

कही दुनियां हुई कुंन सों, सो जुलमत उड़ें उडत।
ताको भिस्त देसी हादी हुकमें, गिरो मोमिनों की बरकत।। १३८ ।।

जो दुनियां कुंन शब्द के कहने से पैदा हुई वह निराकार के हटते ही समाप्त हो जाएगी। फिर मोमिनों की कृपा से श्री राजजी महाराज का हुकम दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करेगा।

Nijanand App

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते।। १३९ ।।

दुनियां के जीव अखण्ड मुक्ति पा जाने के बाद मोमिनों की सिफत करेंगे और कहेंगे कि श्री राजश्यामाजी और रूहों के कारण ही हमें बहिश्त मिली है।

खुदाए कर पूजेंगे, बका मिनें बेसक।
पाक होसी हक इलम सों, करें बंदगी होए आसिक।। १४० ।।

फिर वह अखण्ड बहिश्तों में बैठकर हम मोमिनों को खुदा जानकर पूजा करेंगे और जागृत बुद्धि के ज्ञान से पाक-साफ होकर आशिक होकर श्री राजजी की बन्दगी करेंगे।

मोमिन उतरे अर्स अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद।
ए अर्स से आए हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद।। १४१ ।।

मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं, दुनियां उनसे झगड़ा करती है। मोमिन परमधाम से आकर श्री राजजी महाराज की पूजा करते हैं। दुनियां के जीव निराकार की पूजा करते हैं।

दुनियां दिल अबलीस कह्या, हक अर्स दिल मोमिन।
ए जाहेर किया बेवरा, कुरान में रोसन।। १४२ ।।

दुनियां के दिलों में शैतान, अबलीस की बादशाही है और मोमिनों के दिलों पर श्री राजजी महाराज बैठे हैं। कुरान में यह जाहिर लिखा है।

अबलीस सोई बतावसी, जिन सों होसी दोजक।
बोली चाली मोमिन अर्स की, जासों पाइए बका हक।। १४३ ।।

शैतान, अबलीस तो वहीं का रास्ता बताएगा, जिससे दुनियां को दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा। मोमिनों की बोलचाल सब परमधाम की होगी, जिससे अखण्ड श्री राजजी महाराज और परमधाम मिलेगा।

बैठे बातें करें बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक।
दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक।। १४४ ।।

मोमिन जहां भी बैठकर परमधाम की बातें करेंगे, वही स्थान अखण्ड बहिश्त हो जाएगा। दुनियां वाले अपने पूज्य स्थान पर भी यदि दुनियां की बातें बोलेंगे, तो वह स्थान भी दोजख के समान हो जाएगा।

ए बोहोत भांत है बेवरा, मोमिन और दुनियां।
मोमिन नजर बका मिने, दुनी नजर बीच फना।। १४५ ।।

इस तरह से मोमिनों में और दुनियां वालों में कई तरह से फर्क हैं। मोमिनों की नजर हमेशा परमधाम में रहती है और दुनियां की नजर कुफ्र में (झूठे संसार में)।

कहे महामत अर्स अरवाहें, किया पेहेलें बेवरा फुरमान।
जिन हुई हक हिदायत, सोई बातून करे बयान।। १४६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों का कुरान में पहले से ही विवरण बता रखा है। अब जिनको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि प्राप्त हुई है, वही इस अखण्ड ज्ञान को जाहिर करेंगे।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ १७५२ ॥

Nijanand App